शिक्षक–शिक्षा में उदारीकरण, वैश्वीकरण, निजीकरण बनाम बाजारीकरण

डॉ0 रूक्मिणी चौधरी
शिक्षाशास्त्र

किसी भी देश की उन्नति वहाँ के शिक्षित नागरिकों पर निर्भर करती है। नागरिक शिक्षित तभी होंगे, जब वहाँ के शिक्षक दक्षतापूर्वक अपने उत्तरदायित्व का निर्वाह करेंगे। हमारे देश में शिक्षा यद्यपि सरकार का दायित्व रही है किन्तु बढ़ती हुई आबादी के कारण सरकार सभी को शिक्षा उपलब्ध करा पाने में पूर्णरूप से सुल नहीं हो पा रही है। यद्यपि प्राथमिक शिक्षा पर सरकार का पूरा ध्यान है, परन्तु शिक्षकों के बिना यह कार्य पूर्ण नहीं हो सकता। समाज की आवश्यकता के अनुसार शिक्षक शिक्षा की पूर्ण व्यवस्था सरकारी तंत्र आशाजनक रूप से सम्पादित नहीं कर पा रहे हैं। ऐसी स्थिति में निजीकरण एक अच्छा विकल्प सिद्ध हो सकता है। निजीकरण हमारे देश में प्रचीनकाल से ही किसी न किसी रूप में प्रचलित था। शिक्षा हेतु धन राजा या धनी वर्ग उपलब्ध कराता था, परन्तु गुरूकुलों में उनका कोई हस्तक्षेप नहीं होता था। मध्यकाल के अन्त में निजीकरण समाप्तप्राय हो गया, किन्तु बीसवीं शताब्दी के आठवे दशक में यह एक नये स्वरूप में पुनः अवतरित हुआ और भारतीय संविधान की धारा 19(।)जी में कहा गया है कि "नागरिकों को किसी संस्था की स्थापना करने व चलाने का अधिकार है, यदि पिछड़े वर्ग या दलितों के उन्नयन हेतु हो।"

किसी भी समाज की सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्रतिष्ठा शिक्षक की प्रतिष्ठा में झलकती है। कोई भी समाज अपने शिक्षकों के स्तर से ऊपर नहीं उठ सकता है। शिक्षक – शिक्षा को प्रभावित करने वाले तत्वों में विज्ञान व प्रौद्योगिकी की चुनौतियां, अनुसंधान व नवाचार शिक्षा का सार्वभौमिकरण, उदारीकरण, निजीकरण, वैश्वीकरण, बाजारीकरण, पर्यावरण व जनसंख्या बृद्धि का संकट, विद्यालयी पाठ्यक्रमों में होने वाले चरणवद्ध सुधार मूल्य आधारित व क्षमता आधारित शिक्षा पर जोर तथा अध्यापक निर्देशित शिक्षक की जगह स्वयं अधिगम व समूह अधिगम को प्रधानता आदि प्रमुख हैं, जो शिक्षक – शिक्षा में भी बिना बिलम्ब के सुधार की अपेक्षा करते हैं। निजीकरण के कारण शिक्षा पूँजीपतियों की पूँजी हो गयी है। इससे धनवान व्यक्ति शिक्षा, शिक्षकों एवं शिक्षण संस्थाओं को खरीदकर अपना पूँजी निवेश कर रहा है। असंख्य निजी संस्थाएं कुकुरमुत्ते की तरह खुलती जा रही हैं, किन्तु इनमें शिक्षकों एवं शिक्षा की गुणवत्ता की तरफ ध्यान नहीं दिया जा रहा है। इससे शिक्षा गरीबों की पहुँच से दूर होती जा रही है। अब गरीब घर का मेधावी छात्र डाक्टर, इंजीनियर, मैनेजर बनने का सपना नहीं देख सकता है। वैश्वीकरण जिसके कारण आज पूरा विश्व आर्थिक तथा सामाजिक क्षेत्र में एकीकृत विश्व के रूप में सामने आ रहा है। आज भारत में ही नहीं, बल्कि पूरे विश्व में उदारीकरण, बाजार अर्थव्यवस्था, आर्थिक सुधार निजीकरण तथा भूमण्डलीकरण के नाम पर एवं नई पूँजीवादी, विश्वव्यवस्था की प्रक्रिया संचालित हो रही है। वैश्वीकरण ने न केवल आर्थिक, राजनीतिक या सांस्कृतिक जगत् को प्रभावित किया है, बल्कि शिक्षा जगत् को भी प्रभावित किया है। जहाँ इसने एक ओर शिक्षा जगत पर सकारात्मक प्रभाव डाला है तथा सूचना प्रौद्योगिकी, कम्प्यूटर शिक्षा, इण्टरनेट, इलेक्ट्रानिक मीडिया इत्यादि के माध्यम से शिक्षा को सर्वसुलभ बनाया है, वहीं महँगी शिक्षा प्रणाली से उच्च व्यवसायिक शिक्षा को जोड़कर जनसाधारण को उससे दूर भी किया है।

वैश्वीकरण के फलस्वरूप बढ़ते हुए निजीकरण की व्यवस्था से शिक्षा बाजार की वस्तु हो गयी है। अर्तात वैश्वीकरण व उदारीकरण जो परस्पर सम्बन्धित अवधारणायें हैं जो बाजारीकरण व निजीकरण की ही गोद में फलते–फूलते हैं। भारत में पहले से ही मौजूद गैर–बराबरी को दूर करने या कम करने के बजाय भूमण्डलीकरण के समय की शिक्षा ने देश में गैर–बराबरी और भेदभाव को सुनियोजित तरीके से बढ़ाया है, क्योंकि आज की शिक्षा की दो प्रणालियों में विभाजित हो गयी हैं, उसमें शिक्षा के लिए जितना पैसा खर्च किया जाता है, उतनी ही अच्छी शिक्षा मिलती है। आज शिक्षा के क्षेत्र में व्यवसायिक शिक्षा के प्रति बढ़ते हुए झुकाव ने शिक्षा के निजीकरण व बाजारीकरण तथा निजीकरण जो उदारीकरण

की प्रक्रिया का परिणाम है, उनके सहारे पश्चिम के प्रभुत्ववादी मंसूबे को पूरा करने की एक चतुर प्रक्रिया है।

अतः आज आवश्यकता इस बात ही है कि शिक्षा में गुणात्मक सुधार लाने के प्रभावी उपाय किये जायँ, क्योंकि आज का व्यवसायीकरण व निजीकरण जो शिक्षा की गुणवत्ता को नष्ट करके आगे बढ़ाना चाहता है एवं पूरी शिक्षा की आत्मा को ही दबोच लेना चाहता है। अतः शिक्षा के स्वरूप में परिवर्तन लाकर उसको खरीद–फरोख्त की वस्तु बनने से रोका जा सकता है एवं सही शिक्षा नीतियों को लागू करके वित्तीय मनमानी को रोककर देश को प्रगति व विकास की दौड़ में आगे बढ़ाया जा सकता है। वैश्वीकरण अपने में तो ठीक है, लेकिन शिक्षक शिक्षा के संदर्भ में दुनियाँ छोटी होती जा रही है। शिक्षक–शिक्षा संस्थाएं वैश्विक ग्राम हो गयी है। लेकिन भारत जैसे विकासशील देश में विश्व के उपगमों को इतनी आसानी से लागू नहीं कर सकते। जहाँ पर अभी मूलभूत संसाधन नहीं हैं, वहाँ पर इतनी बड़ी जनसंख्या को कैसे शिक्षित किया जा सकता है। वैश्वीकरण के इस युग में आज भी दूर–दराज एवं ग्रामीण क्षेत्रों में इसका प्रभाव परिलक्षित नहीं हो रहा है। आज शिक्षा का बाजारीकरण हो गया है। अब शिक्षा एक पूंजी हो गयी है, क्रय–विक्रय की वस्तु हो गयी है। समाज में लोगों की संवेदनाएं घट रही है। आज कोई भी डिग्री निजी संस्थाओं से खरीद सकते हैं। एक बी0एड0 की डिग्री एक लाख में अर्जित की जा रही है, और दूसरी पचीस तीस हजार रूपये में, जरा दोनों की गुणवत्ता की बात करते हैं तो हर माता–पिता अपने बेटे–बेटियों को उच्च शिक्षा प्रदान करने के लिए कर्ज ले रहे हैं और शिक्षा पूर्ण होने पर डिग्री प्राप्त कर बेरोजगार बैठे हैं। आज समाज में लड़के वाले शादी में इसकी भरपाई लड़कीवालों से करते नजर आ रहे हैं। अतः आवश्यकता आज इस बात ही है कि शिक्षक–शिक्षा में उदारीकरण, निजीकरण, वैश्वीकरण एवं बाजारीकरण जैसी नवीन प्रवृत्तियों के कुप्रभाव एवं उसके निराकरण एवं सुप्रभाव की बात सोची जाय, तभी भारत जैसे विकासशील देश में सभी को गुणात्मक शिक्षा सुलभ हो पायेगी।

समाज का एक वर्ग यद्यपि निजीकरण को सही मानता है, वहीं दूसरा वर्ग इसकी आलोचना भी करता है। वस्तुतः कोइ भी कार्य अच्छा या बुरा नहीं होता है, बल्कि यह निर्भर करता है कि हम उसे किस उद्देश्य एवं किस प्रकार सम्पादित करते हैं। आज वास्तविकता यह है कि समाज में शिक्षकों की बढ़ती मांग ने उच्च व्यवसायी वर्ग को शिक्षण संस्थान खोलने हेतु प्रेरित किया है। यह सार्वभौमिक सत्य है कि यदि कोई प्राइवेट संस्था इस क्षेत्र में अपना पैसा लगाकर महाविद्यालय या विश्वविद्यालय स्थापित करता है तो वह केवल समाज सेवा हेतु नहीं करेगा, आर्थिक पक्ष भी अवश्य उससे जुड़ा होगा। आवश्यकता इस बात की है कि सरकार और एन0सी0टी0ई0 इस दिशा में सतर्क रहे। मान्यता देते समय एन0सी0टी0ई0 को संस्थानों द्वारा कड़ाई से सभी मानकों का पालन कराना होगा। साथ ही एन0सी0टी0ई0 द्वारा समय–समय पर प्राइवेट संस्थानों का भी मूल्यांकन कराना अनिवार्य करना होगा, जिससे उनके शिक्षा के स्तर एवं प्रांगण में उपलब्ध भौतिक एवं शैक्षिक संस्थानों के सही स्तर का पता चल सके। पिछले कई दशकों से सरकार का ध्यान भी प्राथमिक शिक्षा की ओर ही अधिक है, इस कारण उच्च शिक्षा के क्षेत्र में निजीकरण को बढ़ावा दिया जा रहा है। समाज की माँग को पूरा करने हेतु इसके अतिरिक्त कोई विकल्प भी नहीं है। यू0जी0सी0 द्वारा भी उच्च शिक्षा बजट में लगभग 35 से 40 प्रतिशत तक कटौती कर दी गई और कहा गया कि संस्थान अपने संसाधन स्वयं जुटाने का प्रयत्न करें। यदि कुछ महत्वपूर्ण तथ्यों को ध्यान में रखा जाय तो शिक्षा का व्यापारीकरण रोका जा सकता है। निजीकरण समय की मांग एवं आवश्यकता है, इसे रोका नहीं जा सकता, परन्तु इसे पूर्ण रूप से केवल पैसा कमाने का साधन बनने से रोकना होगा। इसके लिए कुछ प्रयास किये जा सकते हैं।

1. एन0सी0टी0ई0 को मान्यता देने से पहले शिक्षण संस्थान में उपलब्ध भौतिक संसाधनों, पुस्तकालयों आदि की जाँच कर लेनी चाहिए।
2. मानकों का कड़ाई से पालन कराया जाय एवं शिक्षा स्तर में गुणात्मक गिरावट पाये जाने की दशा में मान्यता समाप्त कर दी जाय।

3. निजी संस्थाओं में भी कुछ प्रतिशत सीटों पर ही अधिक धन लेने की छूट दी जानी चाहिए, परन्तु उस पर भी प्रवेश मेरिट के आधार पर ही किया जाना चाहिए, अन्यथा बालक में पैसे द्वारा सब कुछ हासिल कर लेने की प्रवृत्ति पैदा हो सकती है।
4. समाज के विशिष्ट लोग, स्थानीय नेता, कुछ शिक्षाशास्त्री एवं सम्बद्ध विश्वविद्यालय के प्रतिनिधियों आदि को मिलाकर एक समिति बनायी जानी चाहिए, जिन पर (उस स्थान के समीप आसपास) के सभी निजी संस्थाओं की गुणवत्त बनाये रखने का दायित्व सौपा जाना चाहिए।
5. निजी शिक्षक संस्थाओं में भी शैक्षिक योग्यताओं का पूरा ध्यान रखना होगा तथा उन्हें एक सम्मानित वेतन देना होगा, तभी वे पूरे मनोयोग से शिक्षण कार्य कर सकेंगे।

संदर्भ सूची

1. पाठक, आर0पी0 एवं मिश्र, डी0एस0, (2006), अध्यापक शिक्षा की चुनौतियाँ, नई दिल्ली : अध्ययन पब्लिशर्स।
2. सिंह, आरती, (2006), उदारीकरण, निजीकरण, वैश्वीकरण एवं बाजारीकरण के संदर्भ में शिक्षा पर प्रभाव, नई दिल्ली : अध्ययन पब्लिशर्स।
3. पाठक, आर0पी0 एवं मिश्र, (2006), शिक्षक शिक्षा में उदारीकरण, निजीकरण, वैश्वीकरण और बाजारीकरण नई दिल्ली : अध्ययन पब्लिशर्स।
4. चौहान, भावना एवं श्रीवास्तव, (2006), शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रम, नई दिल्लीः अध्ययन पब्लिशर्स।
5. जागीर, एस0एस0, (2006), अध्यापक शिक्षा, नई दिल्ली।
6. विभिन्न समकालीन पत्र–पत्रिकाएं इत्यादि।

गणपति : पौराणिक अनुशीलन

डॉ0 विमलेश कुमार पाण्डेय
एसोसिएट प्रोफेसर, प्राचीन इतिहास,
संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग, सल्तनत बहादुर पी.जी. कालेज, बदलापुर, जौनपुर

सर्वलोवन्दित भगवान गणेश की अर्चना का आलोक केवल भारतवर्ष को ही नहीं प्रत्युत विश्व के अन्य अंचलों को भी सदियो से उद्भाषित करता आया है। वाच पति विनायक की आराधना का जो प्रदीप अनेक शताब्दियों के पूर्व भारतेतर राष्ट्रों में जलाया गया था, वह आज भी निर्धूम और निष्कम्प जल रहा है। इससे लोक भावना भगवान गणेश के प्रति लोक मानस में व्याप्त श्रद्धा और प्रेम का पता चलता है।

भौतिक स्वरूप– भगवान गणपति आद्य पूज्य हैं। उनका स्वरूप नितान्त अव्यक्त, अचिन्त्य और अपार है। उनका रूप परम आराध्य, असामान्य और ध्येय है। पुराणों के रचयिता महर्षि व्यास ने चार श्लोकों में गणपति के रूप सौन्दर्य का अमित मनोहर चित्र प्रस्तुत किया है।

विशालकाय तपाये हुये स्वर्ण सरीखे प्रकाश वाले, लम्बोदर, बड़ी–बड़ी ऑखों वाले, एकदन्त गणपति की मैं वन्दना करता हूॅ। जिन्होंने मौन्जी मेखला, कृष्ण मृगचर्म तथा नाग यज्ञोपवीत धारण किया है तथा जिनके मोलि देश में वालचन्द्र सुशोभित हो रहा है। उन गणपति की मैं वन्दना करता हूॅ। जो अपने शरीर को विविध रत्नों से अलंकृत किया है। ऐसे गणपति की मैं वन्दना करता हूॅ। जिनका मुख हाथी के मुख के समान है जो देवों में सर्वश्रेष्ठ है[1], सुन्दर कानों से विभूषित है। ऐसे गणपति की मैं वन्दना करता हूॅ।

गणपति के समस्त अंग, प्रत्यंग तथा अलंकार आभूषण आदि उन्हीं के स्वरूप होने के कारण अपने आप में परिपूर्ण है। गणपति का मस्तक सिन्दूर से अरूण तथा मुकुट से सुशोभित रहता है।[2] उनके मस्तक पर कस्तूरी का भव्य तिलक सुशोभित रहता है।

गणपति का मुख गज के समान है। शंकर के द्वारा उनका सिर काटकर गज का सिर लगाया गया है तथा संपूर्ण शरीर रक्त वर्ण है।

परशुराम द्वारा उनका एक दांत तोड़ दिया गया है। इसलिये वे एकदन्त है।[3]

गणपति लम्बे उदर वाले हैं। यह लम्बोदर नाम शंकर जी के द्वारा विनोद में दिया गया नाम है।[4] गणपति चतुर्भुज है।

गणपति को अलंकार आभूषण आदि अनेक देवताओं से प्राप्त हुए हैं। गणपति को वन्हिशुद्ध वस्त्र अग्नि से प्राप्त हुआ था।[5] गणपति के कण्ठ में रत्न और मणि जटिल मालायें सुशोभित हो रही है। ये मालायें सावित्री और भारती से प्राप्त हुई है।[6]

सिंहासन की प्राप्ति उन्हें शुक्र से हुई थी तथा रत्नछत्र की प्राप्ति वरूण देवता से हुई थी।[7] मणियों की माला चन्द्रमा से तथा अंगूठी वायु से प्राप्त हुई थी। हाथों की कलाई में सुन्दर वलय (वरूण)[8] लक्ष्मी से प्राप्त हुआ था। गणपति के चरण, बजते नुपुरों से सदा सुशोभित रहते हैं। उनके चरणों में ध्वजा, अंकुश उर्ध्वरेखा, कमल आदि चिन्हित रहते हैं।

इस प्रकार नाना देवताओं से प्राप्त आभूषणों को अपने अंग–प्रत्यंग में गणपति ने धारण किया है, जिसे ब्रह्मा ने स्तुति करते हुए वर्णन किया है।

भगवान गणपति का मुकुट मोतियों और रत्नों से जड़ित है। संपूर्ण शरीर लाल चन्दन से चर्चित है। उनके मस्तक पर सिन्दूर शोभित है। गले में मोतियों की माला है, स्थल पर सर्पयज्ञोपवीत है,[9] बाहुओं में बहुमूल्य रत्न जड़ित बाजूबंद है, उनकी अंगुलियों में मरकत मणि जड़ित अंगूठी है, उनके लम्बे उदर की नाभि चारों ओर से सर्पों द्वारा वेष्टित है। स्वर्ण सूत्रलसित लाल वस्त है। भाल पर चन्द्रमा है तथा दॉत सुन्दर है।[10]

गणपति चारों हाथों में वस्तुयें धारण कर रखी है।[11] मत्स्य पुराण के अनुसार–

गणपति को मोदक की प्राप्ति, मॉ पार्वती से हुई थी।[12] उन्होंने अमृत निर्मित मोदक प्रसन्न होकर प्रदान किया था।

गणपति के साथ उनकी प्रसन्नता और पूजा के लिये उनके परिवार पत्नी और पुत्रों का चिन्तन परम मंगलास्पद है। गणपति सिद्धि–बुद्धि के द्वारा सेवित उनके पति हैं, साथ ही अपने उपासकों को सिद्ध और बुद्धि भी प्रदान करते हैं। बुद्धि विश्वात्मिका है। सिद्धि उसको विमादित करने वाली है, उन दोनों के साथ मंगलमय गणपति की लीला चलती रहती है।

प्रजापति विश्वरूप की सिद्धि–बुद्धि नामक दो कन्याओं से गणपति का विवाह सम्पन्न हुआ था। सिद्धि से क्षेम और बुद्धि से लाभ नाम के शोभा सम्पन्न दो पुत्र हुए हैं।[13] गणपति का सर्वप्रसिद्ध वाहन ''मूषक'' है,[14] उन्होंने वाहन रूप में मूषक की प्राप्ति पृथ्वी से की थी। पुराणों में सिंह और मयूर को भी गणपति का वाहन कहा गया है।

कृतयुग में गणपति का वाहन सिंह है, ये दशभुजा वाले, तेजस्वी रूप और विशालकाय तथा सबको वर देने वाले हैं। उनका नाम विनायक है। त्रेता में उनका वाहन मयूर है, वे 6 भुजा वाले हैं, उनका वर्ण श्वेत है, वे तीनों लोकों में विख्यात मयूरेश्वर नाम वाले हैं। उनके चार भुजायें हैं उनके नाम गजानन है। कलियुग में वे धूम्रवर्ण के हैं। वे दो भुजावाले हैं, सर्वार्थ दाता है तथा अश्व उनका वाहन है।[15]

इस प्रकार गणपति का युगानुसार चार स्वरूप है। शिव पार्वती द्वारा प्रकट हुए गणपति द्वापर युग के गजानन है। ब्रह्मवैवर्त के अनुसार प्रत्येक कल्प में परब्रह्म गणपति बनकर पार्वती की गोद में आ जाते हैं।[16]

उनके कोई माता–पिता नही है, संपूर्ण संसार के वही माता–पिता है। भक्तों के मनोरथ को पूर्ण करने हेतु वे अवतरित होते हैं।

पूज्यपाद संत प्रभुदत्त ब्रम्हचारी महाराज ने अपने लेख में गणपति के विषय में लिखा है– कुछ लोग शंका करते है कि गणपति तो शिव पुत्र है, उनके विवाह में वे उत्पन्न ही नहीं हुए थे, फिर शिव जी ने उनका पूजन कैसे किया? सत्य तो यह है कि गणपति किसी के पुत्र नही है। शिवजी के पुत्र जो गणेश है वे गणपति के अवतार है।[17]

त्रिपुरासुर को पराजित करने के लिये नारद के उपदेश से तप द्वारा शिव ने गणपति की स्तुति की, गणपति उनके सामने प्रकट हो गये, वे पंचमुख विनायक थे, दस भुजाओं और आयुधों से युक्त है।[18]

त्रेता युग यमें सिन्धु नामक राक्षस के बाधार्थ गणपति मयूरेश्वर के रूप में अवतरित हुए, उस समय उनका स्वरूप कोटि–कोटि शीश के तुल्य था। उनके मुखारविन्द की शोभा अवर्णनीय थी। उनका वक्ष स्थल विशाल था। वे षड्मुख थे, त्रिनयन थे, उनके चरणों में ध्वज अंकुश और ऊर्ध्व रेखा युक्त कमल चिन्ह थे।[19]

राजा वरेण्य पर कृपा करने के लिये गणपति द्वापर युग में गजानन के रूप में अवतरित हुए। उनके मस्तक पर किरीट था, अरूण–अधर प्रवाल को तिरस्कृत कर रहे थे, उनके चार भुजायें थी, उन भुजाओं में परशु, माला, मोदक और कमला शोभा दे रहे थे। गले में मोतियों की माला थी, कटि में करधनी की छटा निराली थी। चारू चरण ध्वज, कमल और अंकुश के चिन्हों से युक्त थे।[20]

कलियुग में गणपति का धूम्रवर्ण नाम का अवतार होगा, वे दो भुजा वाले होगें, अश्व वाहन होगा, ढाल, तलवार दोनों हाथों में धारण करेगें।

गणपति को अग्र पूज्यता का वरदान विष्णु, ललिता और शिव से प्राप्त हुआ है[21] –

विष्णु ने गणपति का पूजन और स्तुति की तथा अग्र पूज्यता का वरदान दिया–

भगवती ललिता ने गणपति को सभी देवताओं की पूजा में प्रथम पूजित होने तथा श्रेष्ठ होने का वरदान दिया।[22]

संदर्भ ग्रन्थ सूचीः–

1. मुद्गल पुराण– 5/69।
2. वही, 5/40।
3. नवनीत अगस्त में आचार्य भाई शंकर पुरोहित के (गणपति स्वरूप लेख से 1)।
4. पद्म पुराण, सृष्टि खंड– 66/2–6।
5. गणेश पुराण, उपा. ख.– 14/21।
6. शिव पुराण, रूद्र संहिता, कुमार खंड– 17/57।
7. ब्रह्मवैवर्त पु0 गणपति खण्ड, अभ्यास– 43।
8. ब्रह्म पुराण– 114/11।
9. वामन पु0, उपासना खण्ड– 14/22।
10. गणेश पु0, उपा0 खण्ड – 14/22।
11. वही, – 14/21–25।
12. मत्स्य पुराण अध्याय– 260/53–54।
13. पद्म पुराण– 65/19।
14. शिव पुराण, रूद्र संहिता, कुमार खंड– 20/2–8।
15. ब्रह्मवैवर्त पु0, गणपति खण्ड– 13/21।
16. गणेश पु0, क्रीड़ा खण्ड– 1/18।
17. मुद्गल पु0 खण्ड– 8 अध्याय 19/30।
18. पूज्य प्रभुदत्त ब्रह्मचारी श्री गणेश परम देवता लेख में गणेशांक 1974।
19. गणेश पु0 उपासना खण्ड– 44/27–28।
20. वही, क्रीड़ा खण्ड– 82/1–4।
21. वही, क्रीड़ा खण्ड– 30/10–14।
22. नादर पु0 – 3/65।